श्री राम चन्द्र मिशन®

मार्च २०१० भाग ३, अंक २

India ECHOES
ONE WORLD ONE HUMANITY

For Private Circulation Only

Contents of this Issue

Master's Travels . . . . . Page 1-4
Announcements . . . . . Page 5
Zonal Activities . . . . . Page 6-9
Centre of Light . . . . . Page 10

गुरुदेव का दौरा

रुद्रपुर और हल्द्वानी

गुरुदेव, कोहरे से भरी लम्बी सड़क–मार्ग की यात्रा के बाद, १६ जनवरी को दिल्ली से मुरादाबाद के रास्ते रुद्रपुर पहुँचें। वहाँ पहुँचते ही उन्होंने सत्संग करवाया।

१७ तारीख को उन्होंने सत्संग करवाया तथा नाश्ते के बाद हल्द्वानी के लिये प्रस्थान किया। यहाँ हाल ही में २.२५ एकड़ जमीन आश्रम के निर्माण के लिये ली गई है तथा ६.५ एकड़ जमीन में अभ्यासियों के लिये कालोनी 'सहजपुरम्' बनाने की योजना है। यह स्थान हल्द्वानी शहर से ५ किमी दूर है। गुरुदेव ने वहाँ प्रसाद लगाया, फिर भूमि पूजन की शिला का अनावरण करने के बाद करीब ३०० अभ्यासियों को सत्संग करवाया। तत्पश्चात वे नौकुचियाताल के लिये रवाना हुए वहाँ एक सुन्दर झील के पास की काटेज में उन्होंने विश्राम किया जिसकी उन्हें बहुत आवश्यकता थी। अगले दिन की सुबह गुरुदेव पहले से बेहतर दिख रहे थे। वे अपनी यात्रा के अन्तिम पड़ाव, सतखोल जाने के लिये तैयार थे। स्थानीय अभ्यासियों को सिटिंग देने के उपरान्त उन्होंने सतखोल के लिये प्रस्थान किया तथा वहाँ सुबह ११ बजे पहुँचे।

सतखोल

पहाडी केन्द्रों के अभ्यासी अपने प्रिय गुरुदेव के आने की प्रतीक्षा कर रहे थे और हिमालय के खूबसूरत नज़ारे के साथ–साथ वे भी उनके स्वागत में शामिल हो लिये। गुरुदेव ने पूरा दिन अपने कमरे में काम करते हुए व्यतीत किया और वे काफी प्रसन्न प्रतीत हो रहे थे।

१९ तारीख को ध्यान कक्ष में सुबह ७ बजे सत्संग करवाने के बाद वे पूरे दिन अपनी कॉटेज में काम करने में व्यस्त रहे।

२० तारीख को बसन्त पंचमी के दिन वे प्रातः जल्दी उठ गये। एक रात पहले दाँत में दर्द होने के बाबजूद भी वे प्रसन्नचित्त थे और हमेशा की तरह दिल खुश कर देने वाले अपने अन्दाज़ में बातचीत कर रहे थे। वे सुबह पौने सात बजे ही ध्यान–कक्ष में पहुँच गये। उस सुबह पहाड़ों पर से आये हुये सभी अभ्यासियों के बैठने के बाद उन्होंने सात बजे ध्यान प्रारम्भ किया। उस दिन वहाँ पर ७०० अभ्यासी उपस्थित थे जो स्वयं गुरुदेव के अनुसार सतखोल में अब तक की सबसे ज्यादा उपस्थिति थी। गुरुदेव ने २ विवाह सम्पन्न करवाये। उनकी कॉटेज के सामने पिकनिक लन्च (दोपहर का खाना) का आयोजन किया गया जिस दौरान उन्होंने सभी अभ्यासियों के साथ समय व्यतीत किया। त्योहार जैसा माहौल छाया हुआ था, आकाश साफ था और जाड़े के मौसम में सबने तेज धूप का आनन्द लिया। शाम के समय गुरुदेव, पहाड़ों के आसपास से आये हुए अभ्यासियों से मिले। गोपेश्वर जैसे दूर–दराज के केन्द्रों से आये हुए अभ्यासियों को देखना हृदय स्पर्शी था जो गुरुदेव से मिलने के लिये यहाँ पहली बार आये थे।

अनौपचारिक सत्र के दौरान कहे गये अनमोल मोती

"मेरे लिये विश्वास, साहस और धैर्य सब एक जैसे हैं। विश्वास दिव्य होता है। वे इस विश्वास के साथ इंतजार करते हैं कि एक दिन अभ्यासी उनके पास आयेगा। साहस को स्वयं का बोध नही होता। जब एक माँ अपने बीमार बच्चे के लिये रात को बाहर जाती है, वह साहस होता है, जिसे अपना ज्ञान नही होता। प्रेम के कारण साहस आता है।"

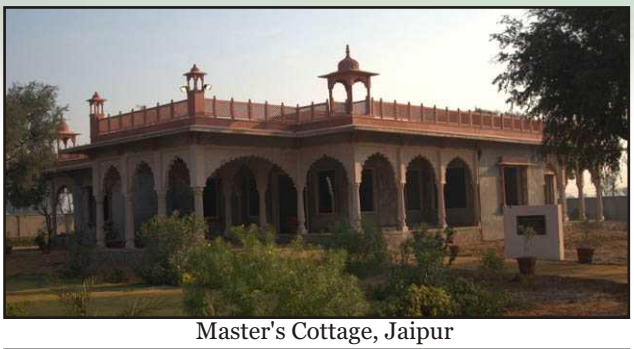
Master's Cottage, Jaipur

In discussion at Jaipur

Inaugurating the Meditation Hall, Alwar

अलवर

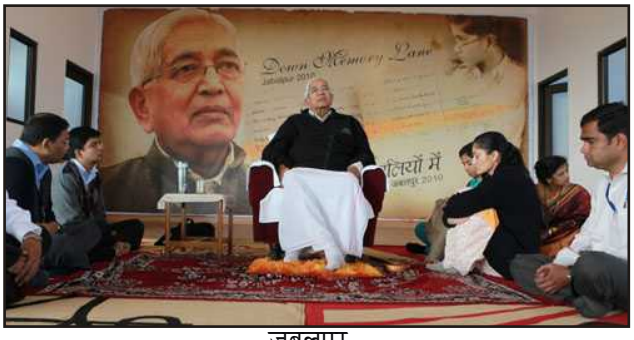

जबलपुर

मेरे साथ जो कुछ भी घटित हो रहा है, उसे प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार कर लेना चाहियें। जब वे मेरे साथ हैं, मेरे अन्दर विराजमान हैं, मेरे साथ कुछ गलत नही हो सकता। जो भी होता है चाहें वह अच्छा हो या बुरा– वह मेरी भलाई के लिये ही है।

२१ तारीख की सुबह ७.३० बजे गुरुदेव ने रुद्रपुर की ओर प्रस्थान किया। मुरादाबाद के लिये निकलने से पहले उन्होंने वहाँ कुछ देर विश्राम किया। अगले दिन वे दिल्ली के लिये रवाना हुए। उन्होंने, काफी थका देने वाली यात्रा के बाद ज़ोनल आश्रम, गुड़गांव में आराम किया। शाम को भाई अजय भट्टर ने करीब ७५० अभ्यासियों को सत्संग करवाया। २४ तारीख की सुबह गुरुदेव के द्वारा कराये गये सत्संग के दौरान २,५०० अभ्यासी उपस्थित थे।

जयपुर

गुरुदेव २४ जनवरी को जयपुर पहुँचे। गुड़गांव से इतनी थका देने वाली यात्रा के बाबजूद गुरुदेव काफी तरोताज़ा प्रतीत हो रहे थे। उनके आगमन पर बहुत सारे अभ्यासियों ने आश्रम में उनका स्वागत किया। वे भाई सुधीर के घर पर रुके क्योंकि आश्रम में काटेज का निर्माण कार्य चल रहा है। वहाँ राजस्थान और गुजरात से करीब २,९०० अभ्यासी एकत्रित हुए और पूरा माहौल प्रेम से ओतप्रोत था। २५ की सुबह गुरुदेव के द्वारा सत्संग करवाये जाने के बाद भजन का कार्यक्रम हुआ। उसके बाद उन्होंने आश्रम के निर्माण कार्य का निरीक्षण किया, दिन भर अभ्यासियों से मिले और कुछ विभिन्न प्रस्तावों को अन्तिम रूप दिया। २६ की शाम का सत्संग उन्होंने आश्रम में करवाया। काफी थके होने के बावजूद वे कई बार बाहर आये और अभ्यासियों के साथ समय बिताया। २७ को उन्होंने सत्संग करवाया जिसके बाद बहन निहारिका ने कविता–पाठ किया। एक वार्तालाप के दौरान उन्होंने कहा कि किसी भी परियोजना/कार्य में आगे बढ़ने से पहले हमें "आदर्शवादिता, सम्भावना और व्यवहारिकता" का हमेशा ध्यान रखना चाहिये। २८ की सुबह गुरुदेव ने अलवर के लिये प्रस्थान किया।

अलवर

गुरुदेव आश्रम की इमारत के उद्घाटन हेतु कुछ देर अलवर में रुके लगभग ५०० अभ्यासियों ने हर्ष, उत्साह और श्रद्धा के साथ उनका स्वागत किया। उन्होंने आश्रम के दक्षिण द्वार पर लगाई हुई उद्घाटन शिला का अनावरण किया। उसी के साथ रिबन काटते हुए उन्होंने ध्यान–कक्ष में प्रवेश किया। उन्होंने लगभग ५० मिनट तक सत्संग करवाने के बाद आधे घंटे से भी ज्यादा समय आश्रम में बिताया जिससे कि अभ्यासियों को उनसे मिलने का मौका मिल सके।

दोपहर के भोजन के बाद उन्होंने कुछ देर विश्राम किया और फिर अलवर के अभ्यासियों को फिर से वहाँ आने का आश्वासन देते हुए कार द्वारा दिल्ली की ओर रवाना हुए।

जबलपुर

गुरुदेव ३० जनवरी को दिल्ली से हवाई जहाज द्वारा जबलपुर गये। लगभग २००० अभ्यासियों ने उनके रुकने के स्थान पर, उनके पहुँचते ही सड़क के दोनों तरफ खड़े होकर उनका स्वागत किया।

३१ तारीख को मध्य प्रदेश के ज़ोनल आश्रम के उद्घाटन के साथ तीन दिवसीय बसन्त उत्सव का शुभारम्भ हुआ। वहाँ का ध्यान–कक्ष प्राचीन ब्रिटिश शैली में निर्मित है जिसे देखकर गुरुदेव को क्राइस्ट चर्च स्कूल की याद आ गई जहाँ उन्होंने शिक्षा प्राप्त की थी।

उन्होंने सुबह ७.३० बजे पट्टी का अनावरण करने के बाद रिबन काटकर इस शानदार ध्यान–कक्ष का उद्घाटन किया। गुरुदेव के बैठने के पश्चात ही अभ्यासियों ने ध्यान–कक्ष में प्रवेश किया। सत्संग के बाद दिल को छू लेने वाले भजन गाये गये। बाद में उन्होंने कार द्वारा परिसर का दौरा किया।

सर्दी में टेन्ट में रहने की परेशानी के बाबजूद सभी अभ्यासी बहुत खुश थे और अपने आप को धन्य महसूस कर रहे थे। पूरा वातावरण एक दिव्य सरोवर के जैसा था। वहाँ एक छोटा

जबलपुर

आरामदायक आवास-गृह, बुक स्टाल, पुस्तकालय और बाल केन्द्र था तथा रहने की सुविधा और व्यवस्था बहुत अच्छी थी।

२ फरवरी को गुरुदेव जब ध्यान-कक्ष में पधारे तो सभी लोगों को समय पर वहाँ बैठे देखकर बहुत खुश हुए। उन्होंने कहा, "कृपया यथाशीघ्र अपना स्थान ग्रहण करें।" फिर घड़ी देखने के बाद मुस्कुराते हुए कहा, "खाने की टेबल पर आप कितनी देर इन्तजार कर सकते हो, अरे भई, जल्दी से खाना दीजिए। यहाँ भी ऐसा ही है। हम अब रुक नहीं सकते, शुरू करना ही होगा।"

सत्संग के बाद भाई अजय ने एक वार्ता दी जिसमें साधना में नियमित होने, लक्ष्य को हमेशा ध्यान में रखने और भंडारों के दौरान गुरुदेव द्वारा प्रदान की गई अवस्था को बनाए रखने पर जोर दिया गया। उन्होंने अभ्यासियों को गुरुदेव के नववर्ष के संदेश का स्मरण कराया और उनसे अपने हृदय में लक्ष्य के प्रति तत्कालिकता का भाव पैदा करने का आग्रह किया।

शाम का सत्संग गुरुदेव ने करवाया उसके बाद उन्होंने एक वार्ता देते हुए कहा "शिष्य वह होता है जो अनुशासित हो; वह इसलिये अनुशासित होता है क्योंकि उसका ह्रदय उसे अनुशासित होने के लिये कहता है नाकि उसका दिमाग। वह इसलिये अनुशासित है क्योंकि वह प्रेम करता है नाकि भय के कारण, और सबसे बड़ी बात वह इसलिये अनुशासित है क्योंकि उसे मालूम है कि केवल अनुशासन के बल पर ही वह अपने उद्देश्य के पथ पर सफलतापूर्वक आगे बढ़ सकता है।"

इस बंसतोत्सव समारोह में करीब ३८०० अभ्यासियों और ३०० बच्चों ने भाग लिया।

नागपुर

गुरुदेव ३ तारीख को प्रात: सड़क-मार्ग से नागपुर के लिए रवाना हुए। रास्ते में वे सियोनी में रुके जहाँ करीब ३०० अभ्यासी उनके लिए प्रतीक्षा कर रहे थे। वे धूप में बैठे और सभी उपस्थित लोगों खासकर बच्चों के साथ प्रसन्नतापूर्वक बातचीत की।

दोपहर के भोजन के बाद उन्होंने नागपुर की ओर प्रस्थान किया तथा सीधे आश्रम जाने का निर्णय लिया जो शहर से करीब १२ किलोमीटर की दूरी पर है। वहाँ लगभग १२०० अभ्यासी एकत्रित थे और उन्हें अपने प्रिय गुरूदेव को देखकर सुखद आश्चर्य हुआ। साढ़े छ: घंटे की थकाऊ यात्रा के बाद उन्होंने थोड़ा विश्राम किया और उसके बाद सत्संग के लिए चलकर ध्यान-कक्ष तक आए। सत्संग के बाद उन्होंने वही रुककर एक लघु सांस्कृतिक कार्यक्रम को देखा। आश्रम में रात्रि भोज के बाद वे रात्रि प्रवास के लिए एक अभ्यासी के घर के लिए रवाना हुए।

४ तारीख को प्रात: उन्होंने आश्रम के निकट बनी आवासीय कालोनी के भूमि दस्तावेज वितरित किए। "जर्नी ऑफ सोल" नामक एक सुन्दर नृत्य पेश किया गया।

जहाँ गुरुदेव रुके हुए थे वह घर लगभग सौ वर्ष पुराना था और जबलपुर में उनके घर जैसा लग रहा था। उन्होंने कहा कि प्राचीन काल में लोगों की मानसिकता विशाल होती थी इसीलिए घर बड़े-बड़े होते थे, लेकिन आजकल जिस प्रकार मानसिकता संकुचित है वैसे ही हमारे घरों का आकार भी सिकुड़ गया है।

गुरुदेव लम्बी प्रतीक्षा के बाद नागपुर केन्द्र आये और इस यात्रा से निश्चित रूप से केंद्र के विकास में सहयोग मिलेगा। उन्होंने सायं ५.४० की फ्लाइट से कोलकाता के लिए प्रस्थान किया।

कोलकाता

४ फरवरी को हर्षोल्लास से भरे हुए अभ्यासियों ने कोलकाता हवाई अड्डे पर गुरुदेव के आगमन की प्रतीक्षा की। गुरुदेव सायं ७.२० पर १०० से अधिक अभ्यासियों (९० से अधिक विदेशी अभ्यासी) सहित वहाँ पहुँचे और सीधे आश्रम की तरफ प्रस्थान किया। ५ फरवरी की सुबह उन्होंने सत्संग करवाया जिसमें करीब ८०० अभ्यासियों ने भाग लिया।

६ फरवरी को सत्संग के बाद भाई एन. प्रकाश और भाई पैट्रिक ने एक प्रश्नोत्तरी सत्र का आयोजन किया। यह एक गजब का अनुभव था तथा पूरे सत्र के दौरान गुरुदेव की उपस्थिति का आभास होता रहा। रसोई घर के स्वयं सेवकों ने गुरुदेव को रात्रि के भोजन के लिए आश्रम के भोजनालय में आमंत्रित किया और गुरुदेव ने कृपापूर्वक उनका आग्रह स्वीकार करते हुए उस शाम अभ्यासियों के मध्य रात्रिभोज किया।

७ फरवरी को सत्संग प्रारंभ करने से पहले गुरुदेव ने एक वार्ता दी और पुन: अनुशासन के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि सत्संग बहुत महत्वपूर्ण है

नागपुर

कोलकाता

लेकिन एक चीज जो सत्संग से भी अधिक महत्वपूर्ण है वह है दैनिक साधना और उसे किसी भी कीमत पर छोड़ना नहीं चाहिए। उन्होंने कहा कि दस नियमों को भी हमारे दैनिक जीवन में इस प्रकार समाहित किया जाना चाहियें कि सभी परिस्थितियों में उनका पालन किया जाए। उन्होंने हर एक से अपने भौतिक और आध्यात्मिक जीवन से की गई अपेक्षाओं के बीच स्पष्ट अंतर करने का आग्रह किया। कई लोग अपने साथ अनहोनी घटित होने पर मिशन छोड़ देते हैं। ऐसे नहीं होना चाहिए क्योंकि हमारे भौतिक जीवन में दुख या सुख सहित हमें जो भी अनुभव होते हैं, वे केवल हमारे संस्कारों की वजह से होते हैं।

सत्संग के बाद बहन अपर्णा घोष ने कुछ भजन पेश किए। बाद में गुरुदेव, भाई अजय भट्टर के घर के लिए रवाना हुए और आगामी ३ दिन उनके निवास पर बिताए। अपने प्रवास के दौरान उन्होंने अभ्यासियों के साथ मुलाकात की, प्रशासनिक कार्य निपटाए और सिटिंग दी। १० तारीख को सुबह गुरुदेव, फ्लाइट से चेन्नई के लिए रवाना हुए।

नये प्रकाशन

द गुरू एन्ड द गोल

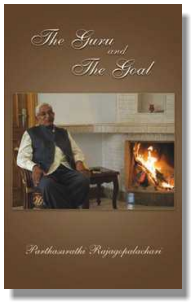

हार्ट स्पीक २००५ (कन्नड़)

मानव विकास में सद्गुरू की भूमिका (तेलगू)

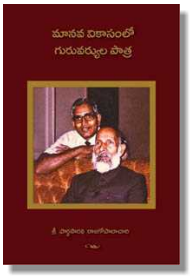

मेरे गुरुदेव (हिन्दी)

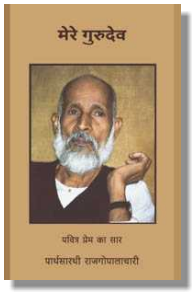

रिएलटी एट डान

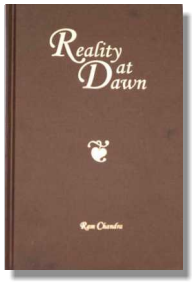

ट्रुथ इटरनल

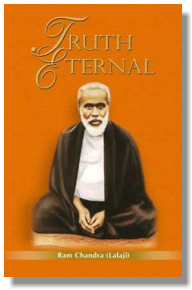

ट्रुथ इटरनल (तमिल)

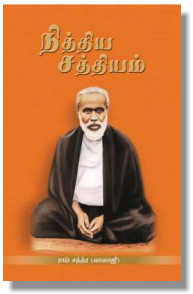

ही द वन्डर-भाग २ (हिन्दी)

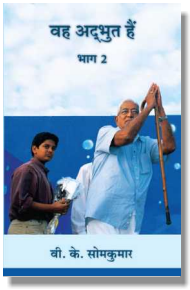

मेरे गुरुदेव (मलयालम)

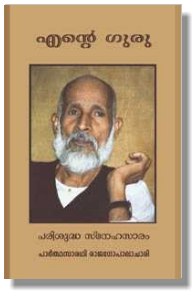

अभ्यासी ड़ायरी

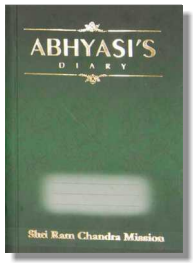

अभ्यासी प्रशिक्षण कार्यक्रम
पनवेल, मुंबई

२५ से २७ दिसम्बर तक एक तीन दिवसीय ज्ञान आदान-प्रदान सत्र आयोजित किया गया जिसमें ३५ प्रतिभागियों ने भाग लिया। पहले दिन पुस्तक पढ़ने का सत्र रखा गया था जिसमें सत्य का उदय पुस्तक का एक पाठ हिन्दी और अंग्रेजी में पढ़ा गया। गुरुदेव की 'सी ऑफ लव' नामक वीडियो वृतचित्र (डोक्यूमैंटरी) भी दिखाया गया। दूसरे दिन सहजमार्ग पद्धति और स्वैच्छिक कार्य पर वार्ताएं शामिल की गई। सत्र के अंतिम दिन की शुरुआत में अभ्यासियों ने सत्र के बारे में अपनी प्रतिक्रिया दी। और उसके बाद धैर्य, प्रेम और अनुशासन जैसे विषयों पर वार्ताएं दी गईं। दिन के समापन पर हर एक अभ्यासी ने प्रिय गुरुदेव के साथ अपनी पहली मुलाकात के अपने अनुभवों को सबके साथ बाँटा। कार्यक्रम का विषय था लुकिंग अहेड (आगे देखना) जिसका तात्पर्य है आत्मावलोकन करना तथा ३ एम (मास्टर, मिशन, मैथड) के प्रति स्वयं में परिवर्तन लाना। ३ दिनों के दौरान इस पर भरपूर चर्चा हुई।

भुज आश्रम, शिलान्यास समारोह

२४ जनवरी को भुज केंद्र के प्रशिक्षक डा. एन. ओ. चौहान ने आश्रम की आधारशिला रखी। आश्रम स्थल पर उपस्थित ७५ से अधिक अभ्यासियों ने इस शुभ अवसर पर गुरुदेव की उपस्थिति का अनुभव किया। आश्रम के लिए करीब ९७८७.३ वर्गगज जमीन वर्ष २००५ में सिटी स्क्वॉयर टाउनशिप द्वारा दान में दी गई थी। यह भुज शहर से करीब १२ किलोमीटर दूर स्थित है।

हमारे गुरुदेव का ८४वां जन्म–दिन समारोह

तारीख २३ जुलाई से २६ जुलाई, २०१०
स्थान : बाबूजी मेमोरियल आश्रम
श्री राम चंद्र मिशन, आई.आई.एम रोड़,
लखनऊ (उत्तर प्रदेश) भारत

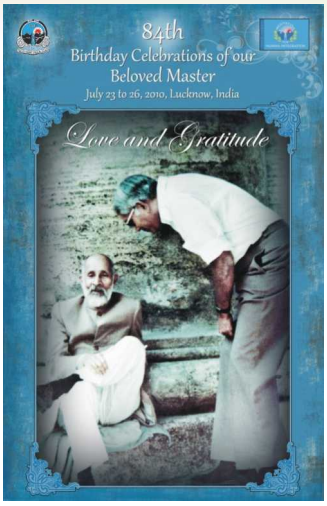

प्रिय भाइयों और बहनों,

प्रणाम! गुरुदेव के शब्दों में "यह (भंडारा) सरोवर (झील) के सुगंधित और ठंडे जल में डूबकी लगाने के समान है जिसमें स्नान करने से अभ्यासी का आध्यात्मिक नवीकरण/उत्थान संभव होता है, बशर्ते कोई उसमें डूब सके।"

हम अपने प्रिय गुरुदेव के बहुत आभारी है जिन्होंने अपने ८४वें जन्म दिन समारोह के शुभ अवसर पर अपनी असीम कृपा के अथाह विस्तार में हमें स्वयं को डुबोने का एक और अवसर दिया है । इस भंडारे का आयोजन लखनऊ शहर में २२ से २६ जुलाई के बीच होगा तथा हम अपने प्रिय गुरुदेव के दिव्य और भौतिक आलोक में २५ जुलाई को गुरुपूर्णिमा का उत्सव भी मनाएंगे।

मालिक करें कि हमारे द्वारा जिया गया हर पल और हमारे द्वारा ली गई हर सांस, हमारे दिव्य गुरुदेव के प्रति इस अस्तित्व को प्रदान करने के लिये हमारी कृतज्ञता की अभिव्यक्ति बन जाये जिसे जीने की उन्होंने हमें इज़ाजत दी है । आइये, हम सब इस शुभ अवसर पर प्रेम और कृतज्ञता भरे ह्रदय से काफी बडी संख्या में एकत्रित हों और इस बहुत ही विशेष सरोवर में लीन हो जायें ।

आपका
अजय भट्टर

निमंत्रण–पत्र और पंजीकरण का ब्योरा, लखनऊ यात्रा आदि की सूचना मिशन की वेबसाइट पर इस पते पर उपलब्ध है:
http://www.sahajmarg.org/24july2010/index.jsp

समारोह से संबंधित ताजा जानकारी और सूचनाओं के लिए समय–समय पर कृपया इस पृष्ठ को देखते रहें। अभ्यासियों से निवेदन है कि अपना पंजीकरण यथाशीघ्र, २५ मई, २०१० से पहले करवा लें।

किसी प्रकार के स्पष्टीकरण के लिए कृपया संपर्क करें :
24july.registration@srcm.org or 24july.helpdesk@srcm.org

यात्रा निवेदन संबंधी जानकारी और आवेदन फार्म

मणपाक्कम या भारत में अन्य एस.आर.सी.एम आश्रमों में जाने की योजना बनाने वाले अभ्यासियों के लिए सूचना अब इस पते पर उपलब्ध है:

http://www.sahajmarg.org/smww/bma-request-to-visit.

मणपाक्कम आश्रम आने, गुरुदेव के साथ यात्रा करने या भारत में किसी भंडारे में भाग लेने के इच्छुक सभी अभ्यासियों को यात्रा अनुरोध के लिये आवेदन करना अनिवार्य है।

इस प्रकार की अनुमति का अनुरोध करने वाले प्रत्येक व्यक्ति की सिफारिश उसके प्रशिक्षक द्वारा तथा देश–प्रभारी/क्षेत्रीय समन्वयक द्वारा किया जाना अनिवार्य है।

कृपया दिए गए दिशानिर्देशों और आवेदन की प्रक्रिया का सावधानीपूर्वक अनुपालन करें। सतखोल, क्रेस्ट तथा मिशन के रिट्रीट सेंटर्स में जाने के लिए पृथक यात्रा निवेदन आवश्यक है और इसे इन केंद्रों के वेब पृष्ठों में से प्राप्त किया जा सकता है।

विगत वर्षों की एक झलक

नवम्बर, १९५० : (बाबूजी की डायरी से): "गुरुदेव के आदेशों का पालन करना पूजा करने से कहीं बेहतर है। यदि कोई व्यक्ति लालाजी महाराज का कार्य करता है तो मुझे उसकी ओर बरबस खिचाव की अनुभूति होती है।"

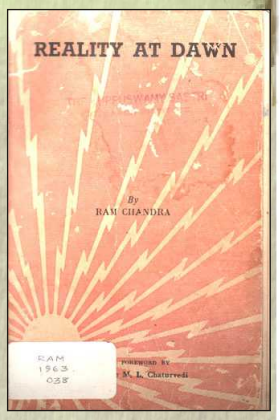

१९५४ : सत्य का उदय नामक पुस्तक पहली बार वर्ष १९५४ में प्रकाशित हुई थी। चित्र में इसी पुस्तक का आवरण पृष्ठ दिखाया गया है।

इस पुस्तक से उद्धरित: "यथासंभव कम समय में लक्ष्य प्राप्ति के लिए अधीरता या सतत् बेचैनी सबसे महत्वपूर्ण कारक है जो हमारी शीघ्र सफलता में योगदान देता है।"

"व्यक्ति को आध्यात्मिक पथ की ओर अग्रसर रखने के लिए सबसे महत्वपूर्ण आवश्यकता संतुलन की है । यह बहुत व्यापक शब्द है और इसमें मानव जीवन के प्रत्येक पहलू का समावेश है । इसका तात्पर्य है सभी ज्ञानेन्द्रियों और क्षमताओं में पूर्ण संतुलन । मन पर बिल्कुल भी छाप छोड़े बिना किसी खास प्रयोजन के लिए किसी विशेष समय पर सभी ज्ञानेन्द्रियों और क्षमताओं में स्वभाविक संतुलन।"

दिसम्बर, १९५७ :

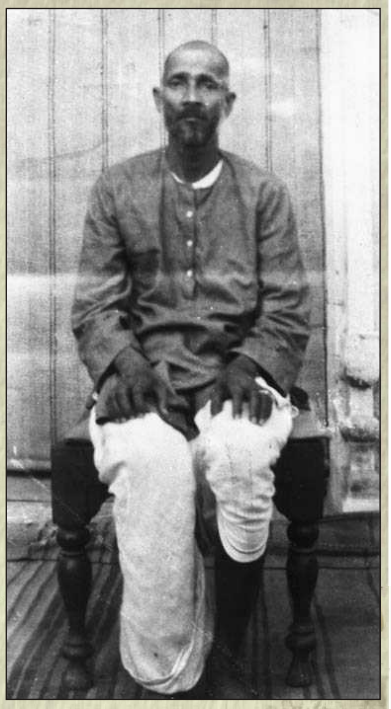

गुलबर्गा, कर्नाटक में आयोजित वार्षिक समारोह के दौरान पूज्य बाबूजी महाराज द्वारा दिए गए संदेश 'आत्मसाक्षात्कार का सरलतम तरीका' से उद्धरित:

"मैं अपने व्यक्तिगत अनुभव के आधार पर एक सरल तरीका बताता हूं जिसका सभी लोग बहुत आसानी से पालन कर सकते हैं। यदि कोई अपने दिल का सौदा करे अर्थात इसे अपने दिव्य गुरुदेव को उपहार स्वरूप भेंट कर दे तो कुछ भी करने की आवश्यकता नहीं रह जाती। ऐसा करने से वह स्वाभाविक रूप से परम सत्य की लय अवस्था को प्राप्त हो जाएगा ।"

"एक बात और : सरलतम ढंग से हृदय का समर्पण करने के लिए केवल इच्छा शक्ति की आवश्यकता होती है। लेकिन इच्छा शक्ति जितनी सूक्ष्म होगी उसका प्रभाव उतना ही अधिक होगा"।

स्रोत : सत्य का उदय, राम चन्द्र की संपूर्ण कृतियां खंड ३ (राम चन्द्र की आत्मकथा खंड २ तथा सार्वभौमिक संदेश के पृष्ठों से)

पूज्य लालाजी का जन्मोत्सव

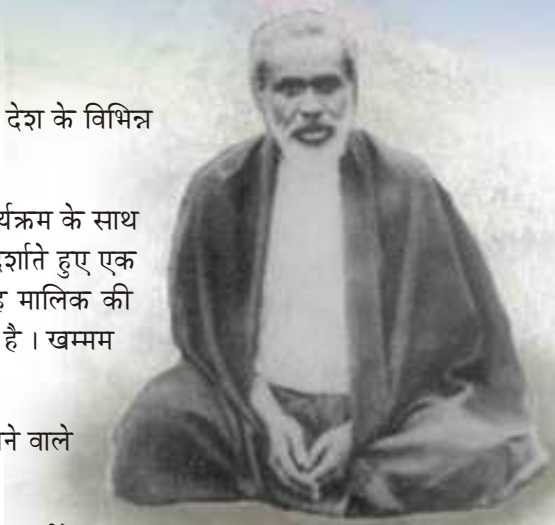

२ फरवरी को पूज्य लालाजी महाराज के जन्म दिवस समारोह को बसन्त उत्सव के रूप में देश के विभिन्न केन्द्रों में मनाया गया। विभिन्न राज्यों की रिपोर्ट निम्नानुसार है:

आंध्र–प्रदेश में कोलाकल्लुरु और खम्मम क्षेत्रों सहित बसन्त उत्सव को पूर्ण दिवसीय कार्यक्रम के साथ मनाया गया। कोलाकल्लुरु केन्द्र ने भाषण और प्रश्नोत्तरी का आयोजन किया तथा यह दर्शाते हुए एक नाटिका प्रस्तुत की कि मनुष्य किस तरह लोभ का शिकार बन जाता है, और किस तरह मालिक की सहायता और सतत स्मरण से वह ऐसी परिस्थितियों से सफलतापूर्वक बाहर निकल पाता है। खम्मम केन्द्र में आसपास के छोटे केन्द्रों से करीब १६४ अभ्यासियों ने इस उत्सव में भाग लिया।

आसाम के गुवहाटी केन्द्र में १५० अभ्यासियों ने मिलकर यह उत्सव मनाया। बाहर से आने वाले अभ्यासियों के लिये ज़ोनल आश्रम की साइट दिखाने के लिये विशेष प्रबन्ध किये गये थे।

'विश्वास', 'वर्तमान गुरुदेव का महत्व', तथा 'सहज मार्ग और भगवद् गीता' पर मालिक की वार्तायें चलायी गयी, जिसके पश्चात लालाजी महाराज के बारे में ऑडियो– वीडियो की प्रस्तुति और नैतिक मूल्यों पर आधारित कार्यक्रम हुए। इस उत्सव का आयोजन स्थानीय अभ्यासियों के लिये एक सीखने वाला अनुभव था।

खम्मम

गुवहाटी

झारखंड के लालपानिया केन्द्र ने बड़े उत्साह और श्रद्धा के साथ यह उत्सव मनाया। सुबह ७.३० बजे के सत्संग के बाद भाई एन.के.शाह ने लालाजी महाराज की शिक्षाओं का वर्णन किया। बहन रतना शाह ने गुरुदेव, मिशन और पद्धति पर प्रश्नोत्तरी का संचालन किया। इससे अभ्यासियों की रुचि बढ़ी और उन्होनें पूरे मन से कार्यक्रम में भाग लिया। इस सत्र से अभ्यासियों के अन्दर निष्ठा, और उनके परिवार के जो सदस्य अभ्यासी नहीं है, उनकी रुचि बढ़ी। कार्यक्रम का समापन शाम के सत्संग के साथ हुआ।

कर्नाटक में गुलबर्गा, हुबली और बीदार ने अपने अपने केन्द्रों पर उत्सव मनाया। इस शुभ अवसर पर गुलबर्गा केन्द्र में १४ जिज्ञासुओं ने अपनी पहली सिटिंग ली। हुबली केन्द्र में १५० से अधिक अभ्यासियों ने पूर्ण दिवस कार्यक्रम में भाग लिया। बिदार केन्द्र में आयोजित कार्यक्रम में आसपास के केन्द्रों से आये अभ्यासियों ने भाग लिया। पूरा दिन गुरुदेव के प्रेम और कृपा में डूबा हुआ था।

मैंगलोर केन्द्र में लालाजी महाराज के जन्म दिवस के दौरान ५० अभ्यासियों ने पूर्ण दिवसीय कार्यक्रम में भाग लिया। दो सत्संग के अतिरिक्त एक वार्ता सत्र का आयोजन किया गया जिसमें मालिक की वार्ता 'सेवा द्वारा प्रेम बढ़ाओ' को पढ़ा गया। ब्रंच के बाद का सत्र अभ्यासियों के भाषणों और गीतों से भरा हुआ था। भाषणों में लालाजी महाराज के जीवन और शिक्षाओं पर प्रकाश डाला गया। दोपहर के सत्र में मालिक की वार्ता 'प्रेम का सागर' दिखायी गयी।

नवम्बर २००८ में परम धाम आश्रम के उद्घाटन के बाद पहली बार बैंगलोर केन्द्र के सभी अभ्यासी यहाँ पर पूज्य लालाजी महाराज का जन्मोत्सव मनाने के लिये एकत्रित हुये। लगभग १३०० अभ्यासियों और १०० बच्चों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया। लालाजी के जीवन और शिक्षाओं पर कई भाषण दिये गये। 'लालाजी महाराज का जीवन' नामक फ़िल्म आश्रम में विभिन्न जगहों पर सी.सी.टी.वी के माध्यम से दिखायी गयी जिससे अधिकाधिक अभ्यासी उसे देख सके। उत्सव का समापन शाम के सत्संग के साथ हुआ।

Hubli

Mangalore

Bangalore

अलुवा,

मिरज़ापुर

कोलकाता

केरल में अलुवा, एरनाकुलम, पालक्कड़, पत्तंबी और कसरगोड़ जैसे केन्द्रों में बसन्त उत्सव का आयोजन आश्रम में पूर्ण दिवसीय कार्यक्रम के साथ हुआ। कार्यक्रम का आरम्भ सुबह ७.३० के सत्संग से हुआ, उसके बाद नाश्ता और लालाजी महाराज के जीवन पर एक वीडियो दिखाया गया। उत्सव के दौरान भजन गाये गये और मिशन का साहित्य पढ़ा गया। पालक्कड़ केन्द्र में पथिरिपाला, नेम्मारा, कोंगड़ और ओत्तपालम केन्द्रों के अभ्यासी एकत्रित हुए।

कसरगोड़ केन्द्र ने एक स्वयं–आंकलन प्रश्नोत्तरी का संचालन किया, जिसमें निम्नलिखित विषयों पर प्रश्न थे: अभ्यासियों का समाज में आदान–प्रदान, कार्य और परिवार के प्रति उनका नज़रिया तथा अपनी शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक अवस्था की देखभाल। इस प्रश्नोत्तरी को लालाजी के द्वारा दिये गये नैतिकता के महत्व को ध्यान में रखते हुये तैयार किया गया था। भाग लेने वालों को उत्सव के दौरान आनंद और कृतज्ञता की अनुभूति हुई।

उत्तर–प्रदेश के मिरज़ापुर केन्द्र ने बसन्त उत्सव को बड़े जोश और उत्साह के साथ मनाया। सुबह के सत्संग के बाद अनेक विषयों पर भाषण दिये गये। भक्तिपूर्ण गीत गाये गये और लालाजी के उद्धरण पढ़े गये।

पश्चिम बंगाल के कोलकाता, गंगटोक, रानीगंज और सिलीगुड़ी केन्द्रों ने इस उत्सव को बड़े जोश, आनंद और आंतरिक खुशी के साथ मनाया। सत्संग के बाद रानीगंज केन्द्र में एक प्रश्नोत्तरी सत्र का आयोजन किया गया। कोलकाता केन्द्र के अभ्यासियों ने 'डेली रिफलेक्शनस' और विस्पर्स के संदेशों को पढ़ा और उन पर मनन_चिंतन किया। लालाजी महाराज के जीवन पर आधारित एक वीडियो दिखाया गया और शाम के सत्संग के बाद कार्यक्रम का समापन हुआ।

महिलाओं का अध्ययन समुह

कोलकाता आश्रम में युवा बहनों ने अपने रोजमर्रा के जीवन से संबन्धित सहज मार्ग के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा करने की एक नई पहल की। इस कार्यक्रम में हर सप्ताह एक विषय को चुना जाता है और सदस्यों को उस विषय पर अपने अनुभवों को बाँटने के लिये आमंत्रित किया जाता है। ऐसी ही एक सभा में दस नियमों में से एक नियम पर चर्चा हुई 'कुल जगत को अपना भाई समझें और सबके साथ ऐसा ही व्यवहार करें'। इसमें गृहस्थ जीवन में आने वाली रोजमर्रा की समस्याओं के समाधान ढूँढे जाते है जैसे बड़े बच्चों के साथ कैसे बर्ताव करे तथा हमारे मूल्यों और पश्चिमी सभ्यता के बढ़ते प्रभाव के बीच किस तरह संतुलन बिठाये। ऐसे ही एक सत्र में सदस्यों को इस बात की अनुभूति हुई कि जिस तरह हम अपने बच्चों से उनकी भलाई के लिये ये चाहते हैं कि वे नियमों का पालन करें, उसी तरह मालिक के बच्चों की भांति हमें भी अपने विकास हेतु मालिक की आज्ञा का पालन करना चाहिये। कई सत्रों के दौरान विभिन्न विषयों जैसे डॉयरी लेखन, अहम से कैसे निपटें, सार्वभौमिक प्रार्थना और सतत्–स्मरण पर विचार–विमर्श किया गया। हर एक सदस्य को विषयानुसार अपना व्यक्तिगत नज़रिया, समस्या और समाधान जाहिर करने के लिये आमंत्रित किया जाता है। जीवन में होने वाली परिस्थितियों पर चिंतन करके यह महिलायें सहज मार्ग के विभिन्न पहलुओं को अपने दैनिक जीवन में उतारने का प्रयत्न करती हैं। सदस्यों से मिली प्रतिक्रिया से मालूम पड़ता है कि विचारों के इस आदान–प्रदान से उनका आत्मविश्वास बढ़ता है, स्पष्टीकरण मिलता है और सहज मार्ग के सिद्धांतो को अपने जीवन में अमल करने के प्रयत्न में नये द्वार खुलते हैं।

लालपानिया में पिकनिक

झारखंड के रांची और लालपानिया केन्द्रों के अभ्यासियों ने मिलकर सहज मार्ग के बारे में चर्चा करने की योजना बनाई और पिकनिक पर इस कार्यक्रम को करने का निर्णय लिया। लालपानिया केन्द्र मेज़बान बना और रांची के भाई रामावतार साहू ने कार्यक्रम की रूपरेखा बनायी। २६ दिसम्बर को लगभग २० अभ्यासी गाड़ी से लालपानिया गये जहाँ लालपानिया के अभ्यासियों के भ्रातृत्व प्रेम और टी.टी.पी.एस गेस्ट हाऊस के हरेभरे बगीचे में सूर्य की उदार गरमाहट ने उनका स्वागत किया। वहाँ के प्राकृतिक और मनोहर झरने ने रांची के अभ्यासियों का मन ताजगी से भर दिया। सहज मार्ग के पहलुओं के बारे में खुला विचार विमर्श भी अभ्यासियों के लिये उतना ही स्फूर्तिदायक रहा। इसका तत्काल परिणाम यह था कि लालपानिया से तीन और रांची के एक सदस्य ने फौरन अपनी प्रारंभिक सिटिंग ली। वहाँ के भोजन, सत्कार और प्रेम ने हर एक को मालिक के कार्य का स्मरण कराया जो हम पर शान्त रूप से काम करते रहते है और हमें ऐसे कार्यक्रम आयोजित करने के लिये प्रेरित करते हैं।

प्रारम्भिक स्तर का अभ्यासी प्रशिक्षण कार्यक्रम

स्मृति ने अभ्यासियों के लिये जो ऑडियो – विजुअल प्रशिक्षण सामग्री तैयार की है वो सहज मार्ग पद्धति के तहत ध्यान के अभ्यास को स्पष्ट रूप से समझाती है। गुरुदेव की वार्ताओं के बीच–बीच से दिखाये गये ऑडियो–विजुअल के अंश अभ्यासियों का ध्यान आकर्षित करते हैं। कार्यक्रम स्मृति द्वारा प्रशिक्षित सहायकों द्वारा कराया जाता है जिससे योजना बनाने में और कार्यक्रम का आयोजन करने में कम प्रयास की आवश्यकता होती है। इसी कारण ऐसे कार्यक्रमों को विभिन्न जगहों पर जल्दी–जल्दी करना आसान हो गया है।

निम्नलिखित केन्द्रों पर कार्यक्रम आयोजित किये गये। वहाँ भाग लेने वालों ने इस कार्यक्रम को सराहते हुये ऐसे कार्यक्रमों को जल्दी–जल्दी आयोजित करने की आवश्यकता महसूस की कि उनके साधना में नियमित होने के लिये ऐसे कार्यक्रम उनके अंदर उमंग और उत्साह का संचार करते हैं।

- रायचुर केन्द्र ने ७ फरवरी को एक कार्यक्रम का आयोजन किया जिसमें ३२ अभ्यासियों ने हिस्सा लिया।
- नेल्लौर, आन्ध्र प्रदेश में १० जनवरी को एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें २८ अभ्यासियों ने हिस्सा लिया। इनमें से ज्यादातर युवक थे जिनके मन में कई प्रकार के प्रश्न थे ।कार्यक्रम के अंत तक वे सब अपने प्रश्नों का उत्तर पाकर संतुष्ट थे।
- चित्तूर, आन्ध्र प्रदेश में ३ जनवरी को एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें लगभग ३२ अभ्यासियों ने हिस्सा लिया।
- थेनि, तमिलनाडु में २७ फरवरी को एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें उन १५ अभ्यासियों ने हिस्सा लिया जिन्होंने २ साल के अंदर ही मिशन में प्रवेश किया था। ये इस केन्द्र में इस तरह का पहला कार्यक्रम था। अभ्यासियों ने इस कार्यक्रम में काफी उत्साहपूर्वक भाग लिया।
- कोयम्बतूर के पास अन्नूर केन्द्र में १४ फरवरी को एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें २० अभ्यासियों ने भाग लिया। कार्यक्रम का संचालन कोयम्बतूर के भाई पलनी कुमारन द्वारा किया गया। यह एक नया केन्द्र है जो कुछ महीनों पहले ही शुरू हुआ है, इस कार्यक्रम से इसे काफी बढ़ावा मिला है।

चित्तूर

अन्नूर

रायचुर

निबंध लेखन प्रतियोगिता– प्रमाण पत्रों का वितरण

७ फरवरी को वाइजैग आश्रम में निबंध प्रतियोगिता के विजेताओं को प्रमाण पत्र देने के लिये एक पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया। ये भारतीय निबंध प्रतियोगिता पिछले वर्ष "संयुक्त राष्ट्र अन्तर्राष्ट्रीय युवा दिवस" (१२ अगस्त २००९) के अवसर पर आयोजित की गयी थी। इसमें लगभग ८०० विद्यार्थियों के साथ अभिभावकों तथा संस्थानों के शीर्षाधीसों ने भी हिस्सा लिया ।आन्ध्र प्रदेश के चिकित्सा विद्यालय को उसके सर्वोत्तम प्रदर्शन के लिये कवच प्रदान किया गया। इस अवसर पर ४२० के करीब प्रमाण पत्र भी दिये गये। बहुत लोगों ने हमारे मिशन के प्रयासों की सराहना की कि यह युवाओं में मानवीय गुणों जैसे प्रेम, एकता तथा भाईचारे की भावना को प्रोत्साहित कर रहा है।

हैदराबाद केन्द्र ने ७ फरवरी को जोन–१ए (आ.प्र.–उत्तर) के विजेताओं के लिये एक उत्सव मनाया। छात्रों को उनके माता–पिता के साथ जोनल आश्रम में आमंत्रित किया गया तथा हर एक विजेता को प्रमाण पत्र के साथ चित्रों द्वारा वर्णित पुस्तक"मेरे गुरुदेव" भेंट की गयी। प्रमाण पत्र वितरण के बाद एक पारस्परिक आदान–प्रदान सत्र हुआ जिसके दौरान बताया गया कि हमारी संस्था क्या है और मानवता के प्रति इसका क्या उद्देश्य है। बाद में श्रोतागणों को निबंध के विषयों पर अपने विचार व्यक्त करने के लिये मंच पर आमंत्रित किया गया। युवकों को अपने अवलोकनों से निकाले गये निष्कर्षों के बारे में बोलते हुए सुनना आनन्दित करने वाला था। प्रत्येक ने यह आशा व्यक्त की कि सिर्फ प्रेम ही इस संसार को एक बेहतर स्थान बना सकता है। कुछ अभिभावकों एवं अध्यापकों ने हमारी संस्था की सराहना की कि हमारी जैसी संस्थायें चुपचाप मानवता की बेहतरी के लिये काम कर रही हैं।

२ फरवरी को विरुधनगर आश्रम, चिन्नावल्लिकुलम् में भाई ए पी दुरई–सह सचिव ने ४३ छात्रों को प्रमाण पत्र वितरित किये। शाम को अभिभावकों और आगन्तुकों के लिये एक जनसभा भी आयोजित की गयी।

सूरत में क्षेत्रीय विजेताओं को उनके माता–पिता, अध्यापकों और प्रधानाचार्य की उपस्थिति में सराहनीय प्रमाण पत्र दिये गये। भाई विनय चावडा, गुजरात के ज़ोनल संयोजक ने लगभग ४५ अतिथियों का स्वागत करते हुए निबंध लेखन कार्यक्रम के बारे में बताया और डॉक्टर सुरेन्द्र अग्रवाल (सूरत केन्द्र–प्रभारी) ने श्री राम चन्द्र मिशन की अनेक गतिविधियों के बारे में एक प्रस्तुति दी जिसमें सहज मार्ग ध्यान पद्धति के अन्तर्गत ध्यान के अभ्यास पर जोर दिया गया।

हानूर

धारवाड

गाँधीग्राम

वी.बी.एस.ई कार्यक्रम

गाँधीग्राम, तमिलनाडु

गाँधीग्राम ग्रामीण विश्वविद्यालय और गाँधीग्राम ट्रस्ट द्वारा लक्ष्मी कॉलेज आफ एजुकेशन के छात्रों और शिक्षकगणों के लिये दो दिन का वी.बी.एस.ई कार्यक्रम आयोजित किया गया । ८ और ९ जनवरी को आयोजित इस कार्यक्रम में लगभग २५० प्रतिभागियों ने भाग लिया । पहले दिन बहन सीता ने मन नियमन, मानवीय गुणों, चरित्र-निर्माण एवं संतुलित अस्तित्व की आवश्यकता के बारे में बताते हुए उसे प्राप्त करने के तरीकों के बारे में वार्ता दी । दूसरे दिन योग और सहज मार्ग पर स्लाइड शो का प्रदर्शन हुआ तथा ध्यान एवं आध्यात्मिकता के लाभ पर वार्तायें हुईं । गाँधीग्राम ट्रस्ट के आनाथालय के बच्चों के साथ हुई बातचीत इस कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण थी । उन्हें मिशन की प्रार्थना और उसका अर्थ समझाया गया । स्वयंसेवकों का दल लक्ष्मी सेवा संगम सिधा मेडिसिन प्रिपरेशन यूनिट का भी दौरा किया तथा वहाँ के कार्यकर्ताओं को भी संबोधित किया ।

धारवाड, कर्नाटक

९ जनवरी को धारवाड के विद्यावर्धक हॉल में वी.बी.एस.ई कार्यक्रम का आयोजन हुआ । जिसमें बाल बालगा, जे.एस.एस स्कूल एवं अन्य स्कूलों से ४० से अधिक अध्यापकों ने भाग लिया । सुबह के सत्र का संचालन बहन आशा एवं बहन सरोजा ने किया, जिसमें उन्होंने 'मानवीय मूल्यों का महत्व' एवं ' बच्चों को मानवीय गुण कैसे सिखायें' विषय पर वार्ता दी । दोपहर के सत्र में भाई अजीत कामथ ने मन के नियमन एवं ध्यान पर वार्ता दी । शाम ५ बजे से ७ बजे तक बहन वरलक्ष्मी ने अभिभावकों के लिए एक सत्र आयोजित किया । श्री शंकर हालागत्ती, प्रधानाचार्य, बाल विकास आकादमी, ने कार्यक्रम की प्रशंसा की ।

कोलकाता

कोलकाता केन्द्र ने १० जनवरी को वी.बी.एस.ई स्वयंसेवकों के लिए एक प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया । कार्यक्रम का उद्देश्य वी.बी.एस.ई की विचार धारणा का परिचय कराना एवं इसके प्रदर्शन संबंधित जानकारी देना था । वी.बी.एस.ई इस बात पर जोर देता है कि किसी को सिखाया नहीं जा सकता, शिक्षा का अर्थ दिल को खोलना है तथा छात्र के अन्दर की बेहतरीन प्रतिभा को बाहर निकालना है । बचपन में ही आध्यात्मिक मूल्यों पर आधारित व्यवहारिक शिक्षा प्राप्त करने से युवा, चुनौतियों का सामना करने के लिए मजबूत हो जाते हैं । वी.बी.एस.ई के कार्यक्रम को कैसे आयोजित किया जाये, इसको समझाने के लिए प्रतिभागियों को अनेक प्रयोग दिखाये गए । इस सत्र को काफी सराहा गया और कई स्वयंसेवकों ने स्थानीय वी.बी.एस.ई टीम में शामिल होने की इच्छा प्रकट की ।

हानूर, कर्नाटक

१७ जनवरी को हानूर केन्द्र में शिक्षकों के लिए वी.बी.एस.ई की कार्यशाला आयोजित की गयी। कार्यशाला में लगभग ३१ स्कूलों से करीब ५० शिक्षकों ने भाग लिया, जिसमें १२ अभ्यासी शिक्षक शामिल थे । ये सभी आसपास के गाँवों से अपने स्कूल और संस्थाओं का प्रतिनिधित्व कर रहे थे । इसमें 'चरित्र निर्माण', 'धैर्य का विकास', 'प्रार्थना का महत्व' आदि विषय शामिल थे । कार्यक्रम को दो सत्रों में आयोजित किया गया, सुबह का सत्र ३ घंटे और दोपहर का सत्र २ घंटे का था । इस कार्यक्रम के बारे में प्रतिभागियों से काफी अच्छी प्रतिक्रिया मिली । कार्यशाला में प्रतिभागियों को 'लक्ष्य प्राप्ति के लिए इच्छा शक्ति का महत्व', 'समय-प्रबंधन', 'आध्यात्मिक और भौतिक जीवन के बीच संबंध' एवं 'मानव एकता' जैसे विषय को समझाने के लिए छात्रों द्वारा अभिनीत वीडियो प्रस्तुत किया गया । इस कार्यक्रम के बारे में शिक्षकों से सकारात्मक प्रतिक्रिया प्राप्त हुई । उन्होंने इस तरह की कार्यशालाओं के आयोजन पर जोर दिया ताकि मानवीय गुणों पर आधारित पद्धति को आगे बढ़ाया जा सके तथा वे अपने स्कूलों में इसे लागू कर सकें ।

युवा कार्यक्रम, रांची

२६ जनवरी को १४ से २३ आयु वर्ग के लगभग ४९ प्रतिभागियों ने रांची के गुजराती स्कूल में आयोजित सेमिनार में भाग लिया । भाई ए.के लाल ने सहज मार्ग की प्रार्थना के बारे में बताया एवं छात्रों को शान्ति पर ध्यान देते हुए प्रार्थना करने का आग्रह किया । भाई मनोज तिवारी ने व्यक्तित्व और चरित्र विकास के बारे में बताया कि व्यक्तित्व के वास्तविक विकास के लिए सभी मुखौटों को हटाकर अपने अन्दर विराजमान 'असली स्व', 'दिव्य स्व' को बाहर प्रकट करना है । सहज मार्ग के दस नियमों का पालन करने से अपने स्वाभाविक स्वरूप में आने की प्रक्रिया में मदद मिल सकती है । बहन सुनंदा चौहान ने दस नियमों को संक्षिप्त में समझाया । प्रतिभागियों को ७ युवाओं के ७ दलों में ७ नियमों (४ से १०) पर विचार करने के लिए बाँट दिया गया । प्रत्येक दल का एक प्रतिनिधि था और हर दल से एक सदस्य को दल के विचार प्रस्तुत करने को कहा गया । विभिन्न विषयों पर चर्चा हुई और उन्हें प्रस्तुत किया गया । सभी प्रतिभागियों को अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करने का आग्रह किया गया । बहुत से प्रतिभागियों ने पारस्परिक चर्चा के लिए अधिक समय माँगा और भविष्य में भी ऐसे कार्यक्रम आयोजित करने का अनुरोध किया ।

इन्दौर आश्रम

इन्दौर केन्द्र जो कभी सिर्फ कुछ ही अभ्यासियों से शुरु हुआ था, अब यहाँ के अभ्यासियों की संख्या बढकर ६५० के लगभग हो गयी है। गुरुदेव ने कृपा करके इन्दौर के अभ्यासियों को कई मुख्य उत्सवों का आयोजन करने का अवसर प्रदान किया जैसे कि १९८६ का स्थापना दिवस समारोह, १९९१ का बसन्त उत्सव और १९९६ में गुरुदेव का जन्म-दिवस समारोह इत्यादि।

इन्दौर आश्रम शहर के मध्य में स्थित है। यह रेलवे स्टेशन तथा बस अड्डे से लगभग ३.५ किलोमीटर दूर है और सार्वजनिक परिवहन की सहायता से यहाँ आराम से पहुँचा जा सकता है। आश्रम के लिये ४०५० वर्गफीट की जमीन १९९२ में खरीदी गयी थी परन्तु औपचारिक रूप से २९ अगस्त १९९३ को गुरुदेव ने इसकी नीवं रखी तथा सत्संग कराया।

इसका निर्माण कार्य मात्र १५ महीनों में पूरा हो गया और २० से २४ दिसम्बर १९९४ को इसके उद्घाटन समारोह का आयोजन बहुत हर्षोल्लास से किया गया। गुरुदेव ने कृपा करके इस अवसर की शोभा बढ़ाई। समस्त ज़ोन से आये हुए अभ्यासियों ने इस खुशी के अवसर पर गुरुदेव की उपस्थिति का आनन्द उठाते हुए उत्सव में हिस्सा लिया।

यहाँ का ध्यान-कक्ष २४०० वर्ग मीटर क्षेत्रफल में बना है, इसमें ८०० वर्ग मीटर की बीच की मंजिल (पहली मंजिल और धरातल के बीच की मंजिल), की जगह भी शामिल है। इसकी संरचना ऊँची छत वाली आर सी सी की संरचना है।

आश्रम की संरचना बहुत सोच समझकर और अभ्यासियों की मुख्य जरूरतों को ध्यान में रखकर की गई है। दूसरी मंजिल पर रसोईघर और भोजनालय बनाया गया है। धरातल पर शौचालय और एक छोटा सा बगीचा बना है। बीच की मंजिल पर एक छोटे से दफ्तर और पुस्तकालय की भी व्यवस्था की गयी है।

गुरुदेव ने १९९०-२००२ के बीच में इंदौर केन्द्र में बार-बार आकर यहाँ के अभ्यासियों पर अपने प्यार की वर्षा की। केन्द्र के विकास और अभ्यासियों की संख्या में लगातार वृद्धि होने के कारण शीघ्र ही जगह की कमी महसूस होने लगी। भाग्य से आश्रम से सटी हुई लगभग ४०५० वर्ग मीटर क्षेत्रफल की उपलब्ध भूमि, २८ अप्रैल २००४ में खरीद ली गयी। सन् २००७ में जगह की बेहतर उपयोगिता को मद्देनजर रखते हुए पहले वाले ध्यान-कक्ष को विस्तृत करते हुए एक नये ध्यान-कक्ष का निर्माण किया गया। १६ से १८ फरवरी २००९ को नये ध्यान-कक्ष का उद्घाटन समारोह मनाया गया जिसमें लगभग २००० अभ्यासियों ने हिस्सा लिया।

आश्रम का स्वच्छ एवं शान्त वातावरण अभ्यासियों की गतिविधियों में जोश भर देता है। रविवार और बुधवार के नियमित सत्संग के अलावा शुक्रवार की सुबह भी ध्यान होता है। यहाँ पर नियमित रूप से कई गतिविधियों का आयोजन किया जाता है जैसे कि बच्चों और शिक्षकों के लिये वी बी एस ई कार्यक्रम, ज़ोनल स्तर के अभ्यासी प्रशिक्षण कार्यक्रम, जनसभाओं का आयोजन, साधना दिशा निर्धारण कार्यक्रम, अध्ययन समुह , निबंध प्रतियोगिता इत्यादि। इंदौर केन्द्र, गुरुदेव के मार्गदर्शन में बहुत सक्रिय रूप से वी बी एस ई की गतिविधियों को चला रहा है। पिछले १० वर्षों से बच्चों के लिये गर्मियों में शिविर आयोजित किये जाते रहे हैं। इंदौर मुख्य केन्द्र होने के नाते उपकेन्द्रों के अभ्यासियों की कई सेवाओं के संचालन में सहयोग दे रहा है जैसे कि पहचान-पत्रों की तैयारी, उत्सवों के दौरान पंजीकरण, मिशन के साहित्य का प्रकाशन इत्यादि।

शुरुआत में सभी अभ्यासी नौसिखिये थे तथा यह नही जानते थे कि मिशन का कार्य कैसे किया जाये, जिसके कारण गुरुदेव को रहने की व्यवस्था से सम्बन्धित काफी भौतिक परेशानियों का सामना करना पड़ा। इन सबके उपरान्त भी गुरुदेव ने बार - बार खुशी से यहाँ आकर इस केन्द्र को 'वो' बनाया जो यह आज है। वे स्वयं ही सारा कार्यभार संभालते थे जिसमें अपने दौरे की योजना बनाने से लेकर स्वयं सेवकों के समुह बनाना, काम की जिम्मेदारी बाँटना, आस-पास के केन्द्रों के अभ्यासियों को आमन्त्रित करना, स्वयं सेवकों के साथ काम करना, उनके साथ में भोजन करना, स्वयं रहने, खाने तथा यातायात की व्यवस्था देखना आदि शामिल था। वे स्वयं अभ्यासियों को मंच पर बुलाकर उनसे भाषण देने को कहते थे और उनके भाषण सुनने के बाद स्वयं वार्ता देकर अभ्यासियों को वार्ता देने का सही तरीका बताते थे। उन्होंने स्वयं जनसभाओं का आयोजन किया, शहर की जानी मानी हस्तियों से भी मिले और उनके प्रश्नों का जबाब दिया। १९९४ में उन्होंने प्रशिक्षकों की गोष्ठी का आयोजन कर उसका संचालन किया।

ये प्रकाश का केन्द्र, अभ्यासियों तथा आध्यात्मिकता के सच्चे जिज्ञासुओं के लिये प्रकाश- स्तंभ हैं जो उसका दिव्य प्रकाश, उन सभी के जीवन में फैला रहा है।

To download or subscribe to this newsletter, please visit http://www.sahajmarg.org/newsletter/india For feedback, suggestions and news articles please send email to in.newsletter@srcm.org
© 2009 Shri Ram Chandra Mission ("SRCM"). All rights reserved. "Shri Ram Chandra Mission", "Sahaj Marg", "SRCM", "Constant Remembrance" and the Mission's Emblem are registered Trademarks of Shri Ram Chandra Mission.This Newsletter is intended exclusively for the members of SRCM. The views expressed in the various articles are provided by various volunteers and are not necessarily those of SRCM.